पर्वतीय नारी समाज

[कुमाऊंनी पद्यावली]

लेखक : चिन्तामणि पालीवाल

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊंनी साहित्य मण्डल

चौरासी घण्टा, बाजार सीताराम दिल्ली-११०००६

मूल्य १ रुपये ५० पैसे

प्रथम संस्करण १९७६] [मूल्य [illegible] पै.

पर्वतीय नारी समाज

[कुमाऊनी हिन्दी गद्य पद्य]

लेखक : चिन्तामणि पालीवाल

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊँनी साहित्य मण्डल

चौरासी घण्टा बाजार सीताराम दिल्ली-६

नारी वर्ष १९७५

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य [illegible] ५० पैसे

प्रमुख प्राप्ति स्थान :

कुमाऊनी साहित्य सदन

चौरासी घंटा बाजार सीताराम दिल्ली-६

प्रथम संस्करण २००० प्रति] दिसम्बर १९७५ [मूल्य [redacted] पै०

पर्वतीय नारो समाज

कुमाऊंनी पद्यावली

कुमाऊनी साहित्य मन्डल

चौरासी घंटा बाजार सीताराम दिल्ली

भारत की प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी जी को

द्वारा सादर समर्पित

●

शुभ कामनायें

कुमाऊंनी साहित्य के मर्मज्ञ कवि श्री चिन्तामणि पालीवाल जी ने पर्वतीय नारी की पिछले दिनों की दयनीय दशा पर सजीव चित्र खींचा है और वर्तमान में नारी समाज के पतनो उत्थान व सम्मान एवं गौरव पर विशेष प्रकाश डाला और भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के चलाए गए बीस सूत्री कार्य का भी प्रदर्शन कराया आपकी इस अनूपम रचना का परवतीय नारी समाज आभारी रहेगा और हम सब पर्वतीय जन आभारी हैं।

आपकी रचनायें सराहनीय तथा शिक्षाप्रद मंत्र मूल बनकर समाज का कल्याण करैंगी यही मेरी शुभ कामना है।

गोपाल दत्त वैला

अवकाश प्राप्त प्रधान अध्यापक

विनायक इन्टर कलिज

जिला अल्मोड़ा

श्री पालीवाल जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप कुमाऊँनी साहित्य मण्डल दिल्ली की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष में 'पर्वतीय नारी समाज' का प्रकाशन कर रहे हैं जो कुमाऊँनी भाषा में वास्तविक नारी समाज का दर्पण होगा। मैं आप जैसे वरिष्ठ कवि की रचना के प्रति अपनी हार्दिक शुभ कामना प्रकट करता हूँ तथा सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय
हरिश्चन्द्र लखचौरा
एम.काम.एल.एल.बी. एटवोकेट
भिक्यासैंन जिला अल्मोड़ा

कुमाँऊनी साहित्य-मण्डल के वरिष्ट कवि श्री पालीवाल जी के द्वारा रचित "पर्वतीय नारी समाज" के प्रकाशन से मुझे अति प्रसन्नता हुई।

कोई भी भाषा, आदर्श साहित्य के ही माध्यम से भाषा का स्वरूप पा सकती है, अन्यथा बोली मात्र में ही उसका स्थान सीमित रह जाता है, कुमांऊनी भाषा में प्राचीन काल से कई वरिष्ट कवियों की साहित्य रचना चलती रही। सम्प्रति श्री पालीवाल जैसे प्रतिभाशील व्यक्तियों ने इसमें महत्वपूर्ण साधना की है।

पर्वतीय नारी समाज पर इससे प्राचीन सांस्कृतिक प्रभाव के साथ साथ आधुनिक सभ्यता का भी संचार होगा।

आशा है इस रचना से पर्वतीय नारी समाज पर शील-सदाचार के सांथ-सांथ राष्ट्रीय भावनाओं की भी जागृति होगी, यही मेरी शुभ कामना है।

मथुरादत्त खुल्वे साहित्याचार्य
वेदान्त शास्त्री ज्योतिष तीर्थ एम०ए०
ग्राम चौड़ा पाली पछाऊँ अल्मोड़ा

दो शब्द

भारतीय नारी के गौरव और गरिमा तथा उसके शौर्य की गाथा समस्त विश्व में विख्यात है। प्राचीन काल से ही भारतीय नारी ने अपने आदर्श चरित्र तथा गौरवपूर्ण परम्परा के निर्वाह से देश का मस्तक ऊंचा किया है। सारे विश्व में महिला वर्ष मनाया गया। भारत में भी अनेक योजनाएं नारी जाति के उत्थान के लिए बनाई गई।

हमारा सौभाग्य है कि विश्व की सर्व सम्मानित महिला आज भारत की कर्णधार हैं और देश, समाज तथा मानवता के कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प लिए हुए हैं और देश के नव निर्माण में जुटी हैं। है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भारतीय नारी की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाये हैं और भारतीय सभ्यता संस्कृति तथा मर्यादा के अनुकूल महत्वपूर्ण कार्यों द्वारा देश को एकता के सूत्र में बांधकर नई दिशा दी है। इससे भारतीय नारी जाति में भी नई चेतना जागी है और वातावरण को एक ऐसा रूप मिला है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पारस्परिक स्नेह, भाईचारे समानता तथा न्याय के आधार पर देश की सेवा में अपना सब कुछ लगाने को तैयार है।

उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। वहां की नारी त्याग और करुणा की सजीव मूर्ति है। संघर्षों से जूझती हुई पर्वतीय नारी ने अपने जीवन में उच्च आदर्शों और मान्यताओं को अपनाया है। वह आदर्श पत्नी, स्नेहमयी बहिन, ममतामयी माँ और लाड़ली बेटी की भूमिका तो निभाती ही है, समाज सेविका के रूप में दया की मूर्ति भी है। सदियों से दूसरों की भलाई परिवार के सुख तथा समाज के उपकार के लिए परिश्रम की चक्की में पिसती आई पर्वतीय नारी आज जागरूक है। आज वह केवल सुखी गृहस्थी का भार वहन करने वाली मात्र गृहलक्ष्मी ही नहीं वरन् अध्यापिका, लेखिका, साहित्य सेवी, समाज सवी अधिकारी, राजनीति में योग देने वाली तथा देश के विकास और जनता के कल्याण के लिए कार्य करने वाली जागरूक महिला है। यह पर्वतीय क्षेत्र तथा देश दोनों के लिए शुभ लक्षण है।

कविवर श्री चिन्तामणि पालीवाल जी अपने काव्य के माध्यम से सामाजिक चेतना तथा जन कल्याण की अलख जगाते रहते हैं। पर्वतीय नारी के बारे में काव्य रचना वर्तमान परिस्थिति में तथा २०-सूत्री कार्यक्रम के संदर्भ में महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके लिए लेखक को बधाई है।

—डा० नारायण दत्त पालीवाल

भूमिका

नारी वर्ष समापन के उपलक्ष में पर्वतीय नारी समाज नाम की पुस्तक आपके हाथों में है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत की प्रधान मन्त्री श्री इन्दिरा गांधी के मनाये गये १९७५ का वर्ष नारी बर्ष के समापन पर श्री चिन्तामणि पालीवाल ने पर्वतीय नारी के पतनोत्थान पर प्रकाश डाला है। पुस्तक में बताया गया है कि पर्वतीय क्षेत्रों की कमजोरी और पिछड़ा पन तथा कुछ रूढ़िवादता के कारण पर्वतीय नारी का कितना अनादर व अपमान था। प्रथम बाल्यकाल से पितृ घर से ही कहा गया है कि :—

चेली कणी को पढ़ांछा स्कूल कौलिज।
घर खेती कमाणै की हौणि चैं नौलिज॥

इन्ही विचारों से पर्वतीय नारी पिछड़ी रही फिर पति के घर जाकर भी वह उपेक्षित ही रही, वहां पति किस भाव से बात करते हैं :

सैणी कंणि को लिजांछा देश परदेश।
सैणी का दगड़ा हौछा बहौत कलेश॥

इन्हीं कारणों से पर्वतीय नारी सदियों से पिछड़ी हुई थी जिसके कारण बाल विवाह बेमेल विवाह आदि होते थे।

अब वह युग बदल गया है। बीसवी सदी के तीसरे चरण में जब भारत आजाद हुआ था तब से नारी को समानाधिकार प्राप्त हुआ था। अब बीसवीं सदी का चौथा चरण शुरू हो रहा है। पर्वतीय नारी का कितना विकाश हुआ यह सब देख रहे हैं।

आज नारियां टीचर हैं, क्लर्क हैं, नर्स हैं, डाक्टर हैं, अफसर हैं, इन्हीं की संतान हर बालिका विद्यालय में पढ़ती हैं। यह सब इन्दिरा गांधी जी के १० वर्षों का परिणाम है। इसलिए 'पर्वतीय नारी समाज' पुस्तक इन्दिरा जी को समर्पित की जाती है। पुस्तक में नारियों की सभा में विभिन्न विदुषी नारियों के भाषण दिए गए हैं जिससे पर्वतीय समाज का उत्साह बढ़ेगा। त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी।

प्रकाशक

एक कथानक

वसंत ऋतु के मधुमय मौसम में जब पर्वत वनों व जंगलों में सभी वनस्पतियाँ नव पल्वित हो जाती हैं तो बाज के पेड़ों पर भी नये परो (पउवा) आ जाता है और और बुरांश के पेड़ों पर भी फूल खिल जाते हैं और सीढ़ीदार खेतों की दिवारों पर दूदि पेहूली के फूल खिल जाते हैं तथा उनके बीच-बीच में हरी घास उग जाती है और पुरानी घास के जड़ो पर नये पौधे कोपले पनप जाते है तब पर्वतीय ग्रामीण नारियां घास काटने जाती हैं। घास काटते समय वह कुछ हलके सूरमें गाती गुन गुनाती है। जाते व आते समय वह आपस में कुछ बात चीत करती रहती हैं इसी प्रकार वह घास काटकर घर आते समय अपने आपस में कुछ बातचीत करते आती हैं। उसी बीच में अब नारी की प्रगति और नारी की जागरुकता की भी चर्चा चलती है।

भागरती पारवती दो सहेली आपस में बातचीत करती हैं जो कि बचपन से ही साथी है उन्होंने जब नारी युग व नारी जागृति की बातें करी तो सब घस्यारियां बड़ी सुरुचि व गौर से उनकी बातें सुनती रहीं। उनकी बातें सुनकर उन घस्यारी युवतियों के मन में बड़ी उमंग आ गई। पर्वतीय नारी समाज की बातें चल रही थी पर्वतीय नारी सभा का आयोजन सुनकर वह सब सभा में जाने के लिए उतावली हो गई। उसके तीसरे दिन सभा हुई। सभा में बड़ी-बड़ी विदुषियों के भाषण हुए वह सब घस्यारियां सभा में गई भाषण सुने और पर्वतीय नारी समाज की सदस्या बन गई। उनका ध्यान बिल्कुल ही पलट गया।

सभा में अनेक विदुषी के भाषणों में सुना कि प्राचीन काल में नारी का क्या स्थान था और बीच में कितना परिवर्तन आया। अब स्वतन्त्रता के बाद कितनी प्रगती हुई यह आप आगे पढ़कर देखेंगे।

पर्वतीय नारी समाज

भागरती पारवती सुणि वै बयान।
पलटिगों पहाड़का सैणियोंक ध्यान॥
सुणि बटी सम्भाषण जाग्रती है गेछा।
सभा समाजम जैबै चेतना ऐ गेछा॥

पार्वती

आए भुला भागरती बैठ म्यरा पास।
सुणौला त्यकणी आज बात एक खास।
बेईया मैकणी मिली रमोती खगोती।
सेठों की मोहनो और पधानु की मोती॥
उनुले सुणायी तब नयीं समाचार।
बहौतै बढ़िया लागा उनरा विचार॥
चार सहेलियाँ छैउं हाई स्कूल पास।
देख धैं कतुक आब बढ़िगों विकास॥
उनरा बातों में म्यरौ लागी गोय ध्यान।
मैत हय अनपढ़ मुरख अज्ञान॥
आपण अपणा तब भाषण सुणाया।
सैणियों की समस्या का बात समझाया॥
यस कय नारी जाती पिछड़िया रयी।
सबला है बेर लकी अबला हैरयी॥

अब आई गोछ कय विकासक युग ।
समाजौ विकास और नारियों कौ युग ।।
यस कय हम एक समिती बनौला ।
महिला समाज कणी उपर उठौला ।।
नारी बर्ष मजी वीकी सथापना कौला ।
नारी जाती नारीयोंकौ उत्थान करौला ।।
नारी वर्ष मनै रौछ इन्द्रा गांधी जी लै ।
नारियों समाज हणी प्रधान मंत्री लै ।।
हमलै बनौला एक समाज की क्यारी ।
समाजौ कौ नाम हलौ परवती नारी ।।
सब सैणियों कैं उमें सदस्य बनौला ।
पिछणियाँ नारी जातीं आधीन बढ़ौला ।।
तुम लकी अया कय सभा मज भोल ।
बार बजे द्वी तारीक चैत पैट सोल ।।
प्रस्ताव पास कला सुणला भाषण ।
दगड़ियों हांती लकीं कैं दिया आपण ।।
बताये पै भागरती कसौ कौला कैछैं ।
मलै तबै ज़ौल भुला जब तुलै ऐछै ।।
दगणिया हया हम नन छिना बटी ।
म्यर हौछी नामकरण त्येरी हैछी छटी ।।
त्यर म्यर व्याह लकी एकैं साल हयो ।
सनजोग यस मिल एकै गौ हयो ।।

मैत लै सरास हम दगड़िया हर्या ।
घा लकड़ा पाणि लकी दगड़ै रहया ॥
खेल लै कौतीक लको जतरा जागेर ।
ढोलक हुड़क लकी भ्यार लै भितेर ॥
सब जग हणी हम दगड़िया हया ।
आज अब सभा में उँ ऐजया कै गया ॥
हिट भुला देखि औला सभा लैं समाज ।
पैली पैली सैणियों की सभा छायो आज ॥
हम हया अनपढ़ अविद्या अज्ञान ।
आबाका चेलियों कणी हयी गोछ ज्ञान ॥
पढ़ि लिखी बटी आब है हुस्यार ।
करीला नानीयां अब समाज सुधार ॥
मिडिल लै हाई स्कूल है गई चैलियाँ ।
गायन भजन कनी सखी सहेलियाँ ॥
कबीता व गीत लकी लेख लै लेखनी ।
अखबारों में उनरा नाम लै छपनी ॥
हिट पैए भोल हणी तैयार है रये ।
दगड़िया जो मिलीला सबुकैं बुलये ॥

मागरती

है मुए तू साँची कैछै दीदी पारवती ।
नारियों में हैगै अब भौत परगती ॥
सोखीया पढ़िया हैगी पहाड़ा सैणियाँ ।
सब जानो कालेजों में चेलिया बैणियाँ ॥

कतुक कलर्क हैगी टीचर मास्टर ।
कतुक अफसर हैगी नर्स लै डाक्टर ॥
गायिका वादिका हैगी कवित्री लेखिका ।
संसोधिका विवेचिका और सम्पादिका ॥
उयो अब हयी रई नेता प्रचारक ।
महिला समाज मजी हैगी प्रस्ताबक ॥
जरूरैं बनौल आब महिला समाज ।
नारी बर्ष बटि हलौ अधिक बिकास ॥
हिटीयें पै भोल हणी हम लकी जौला ।
और लकी दगड़िया सबुकै बुलौला ॥
रधुली गोपुली कणी खबर कै दिये ।
सरूली जसुली कणी धाद लगै दिये ॥
परुली जोगुली हणी में खबर कौला ।
मधुली, नदुली लकी सबबु लै न्योला ॥
परतिमा, मनोरमा, सुरमा, धरमा ।
मोतिये की इजा लकी कमुबै की अमा ॥
पौरैकी भागुली दोदी नरुली की काखी ।
मोतुली की ठुली दीदी जेठिया हिरैकी ॥
चनुली पनुली हया दिल्ली का रणिया ॥
आजकल घर ऐरै फिर छै जणिया ॥
बुलाऔं यों सबों कणी हीटौ भोल जौला ।
महिला समाज मजो सदस्या है जौला ॥

दूसरा दिन

दीदी भुली सासु ब्वारी हयी गया कट्ठा ।
गौ पना सैणियाँ सब लागी गया बट्ठा ॥
धौपरी है गेछ अब बाजी गई बार ।
सौणियो की घाद अब लैगे वार पार ॥
आओ दीदी आओ भुला काखी लै जेठिया ।
आओ सासु आओ ब्वारी त्यर छा देखिया ॥
जागी जा मैं आई गोयू ओ भूलू गोपुली ।
म्यर वाँ देखिया नीछ बाट जौला भुली ॥
सासु ब्वारी, दीदी भुलो, ननद, भौजिया ।
सब आई गया अब काखी लै जेठिया ॥
नहैं गया सभा मजी सब दगणियाँ ।
देखनी वाँ मौते ठुली सभा छा जुड़ियाँ ॥
जुड़ी रयो उतो सब महिला समाज ।
मंच लै माईक लकी सजी रया साज ॥
बैठिया छैं सभापती और सभासद ।
नारीये छैं नेता सब मैंस नैं क्वे मर्द ॥
सबु पैली अध्यक्षा कौ है गोय चुनाव ।
फिर पैजै बक्ताओं का पेस छैं प्रस्ताव ॥
वक्ताओं का भाषण पै हनी बारी बारी ।
समाजौ कौ नाम कर्ण परवती नारी ॥
कैले माँग सोची रैछ समानाधिकार ।
कैकी माँग नारीयों कौ विषेशाधिकार ॥

कवै ल्यरयी बनै बटी हास्य रस व्यंग ।
अपण अपण सब बोलण का ढंग ।।
कवैं ल्यरयी लोकोक्तियां कवै ल्यरयी गीत ।
कवै ल्येरयी अन्ताक्षरी उमैं हार जीत ।।
आब जब वक्ताओं का नाम लेखा गया
टेम हैगों कम वक्ता सक्कर है गया ।।
प्रबंधक कनी तब वक्ताओं हांती ।
दिदीयो भुलियों सुणों टैम ज्यादा न्हांती ।।
काम करो ज्यादा अब बात कम कया ।
पाँच पाँच मिनटमा खतमा कै जया ।।
सबुकै मिलण चैछ थोड़ा थोड़ा टैम ।
सबुकी सुणणी चैछ निकरण भैम ।।

पर्वतीय नारी सभा में भाषण

खगोती देवी आर्य

सभापती महोदया सदस्या सज्जनी ।
बालीकाओं मां वैणियों बुजरुग जनी ।।
विनय छा सबौ हणा भलीक सुणिया ।
ज्य मैं कौला ट्यड़ बांग मन में गुणिया ।।
त्रुटियों तरफ न्यरा भ न दिया ध्यान ।
भावों कणी समझिया जो असली ज्ञान ।।
सुणि लियो माँ वैणियो यथा ध्यान दिया ।
असली अरथ कणी भली समझीया ।।

नारी जाती आज तक उपेक्षित रयी ।
क्यलकी हमरी एमें कमजोरी हैयी ।।
कुछ कमी हमरी है कुछ माजै की ।
कुछ कमी कुरीती की कुछ रिवाजै की ।।
कुछ कमी कुप्रथा की कुछ समस्या की ।
कुछ कमी धन की है चेली च्यलों ब्या की ।।
समस्यायां ऐसी हयी स्कूल नी हया ।
थोड़ा भौत हया जब दूर-दूर हया ।।
दूसरौ स्कूलों हौणी हणै चैछ धन ।
धन लै निहय जब फिर चैछ अन ।।
अनै की लै कमी हई पहाड़ की खेती ।
उबड़ खावड़ जग डन खना ऐती ।।
द्यो हयोता नाज हय नतरा अकाव ।
ह्यौन हैं न्है गया फिर भावरैकी भाव ।।
रिवाज या यस हय सारे समाजम ।
चेली कणी पढ़ाणक नी हय धरम ।।
कय कणों हैरौछ कय चेली पढ़ें बेर ।
इनैलता र्वाट खाणी खेती कमै वेर ।।
फिर हैयो चेली जात पर घरै भान ।
इनैली सरास जाणों जनमकी कान ।।
चेली कणी को पढ़ाछा स्कूल कौलिज ।
घर खेती कामैकीयां हौणिछै नौलिज ।।

ऐसिकै हमरौ वैणा आनादर हयो ।
नारी जाती हम तब दबिये रहयो ॥
अब म्यरा मां वैणियों चेतन हैजावौ ।
सभ्यता को युग ऐगो आधीन ऐजावौ ॥
आब हैंगों सबुकौ यां समअधिकार ।
और बांकी नारियों कौ विशेषाधिकार ॥
आओ सब दीदी बैणी आधिन ऐजाओं ।
महिला समाज मजी सदस्या हैजाओ ॥
ह्यतुकै कणोंछ मैले टेम भौत हैगों ।
सभापती माफ कया समै भौत लैगों ॥
अधिल की बात कभैं अघील सुणौला ।
महीला समाज मजो फिर कभै औला ॥
सभासदों मां वैणियों जै-हिन्द जै-हिन्द ।
जै-भारत जै-नेहरु इन्द्राजी जै-हिन्द ॥

सभापति–

अब रमोती देवी वर्मा प्रभाकर अपने विचार व्यक्त करेंगी । मैं उनसे निवेदन करती हूँ कि वह अपने उच्च विचार आपके सामने रखेंगी और पाँच मिनट में ही गागर में सागर भर देंगी ।

रमोती देवी वर्मा प्रभाकर

माननीया अध्यक्षा जी और माँ वैणियों ।
बयोवृद्धा विदूषियों पहाड़ा सैणियों ॥
सबों हणी विनय छौ जोड़ी बेर हात ।
ध्यान दिवे सुणि लिया थोड़ा म्यरा बात ॥

ज्यादा भाषणों कौ ऐल टैम लै निहय ।
अध्यक्षा महोदया लै इशरा मैं कय ॥
और ज्यादा के निकौ में एतुकै कै घूला ।
नारी बर्ष मजी हम एक ब्रत न्यूला ॥
चेलीच्यला सबों कणी मानण समान ।
सुचरित्रवान बनों हमरी संतान ॥
सिकैं पढ़ै सबु कणी भलिक व्यवाणौ ।
नै कैकैं दहेज दिण न दहेज न्याणौ ॥
हमरा समाज मजी एक छी कुरीत ।
यौ आब खतम हैगे और एक रीत ॥
पैली कंछो चेली वला यतु खर्च न्यूला ।
चेलीकौ जिवर न्यूला पै दहेज द्यूला॥
आब कनी च्यला वला तुम क्य क्य द्यला ।
चेली हम लिजौलता दहेज क्य द्यला ॥
बी० ए० पास च्यलौ म्यरौ बहौतैबढ़िया ।
तुमरी चैलीक हयो मिडिलै पढ़ियां ॥
यों द्वीये कुरीत हया गलत रिवाज ।
यसीकै पीछड़ी रय हमरौ समाज ॥
नारी जाती पैली बटी उपेक्षीत रई ।
नारीयों को नाक दरी यो रीती लैं हई ॥
यई कुरीतों लै हम अनपढ़ रया ।
सभा समाजम हम कभैं लै नी गया ॥

न कभैं किताब द्यखा पोस्टर अखवार ।
नैं कभैं हमुलैं द्यखौ घर हवै भ्यार ।।
एती हम रात दिन वौल कनैं मरा ।
चेलिया ब्वारीया हम सैंणी जात ठरा ।।
सैणी कैं अकल नींछा हमु हांती कयो ।
यसिकै हमरौ बैणा ह्यवतम हयो ।।
मां वैंणियों अब हम योसुधार कणों ।
योम्यौर कईया कुछ ध्यान मौ धरण ।।
यतूकै कैंवटी आब मैं जोड़नू हात ।
आधील सुणिया और बक्तावों का बात ।।

—:o:—

सभापति

अब मोहनी देवी गुप्ता साहित्य रत्न अपने विचारों से आपको अवगत करायेंगी । वह आपको बतावेंगी कि नारी जाती की प्राचीन विशेषताएं क्या थीं और अर्वाचीन काल में क्या हुआ और अब नारी का क्या स्थान है ।

मोहनी देवी गुप्ता

अध्यक्षा ज्यु मां वैंणियों बेटियों चेलियों ।
आदरणया बड़ी बूढ़ी सखी सहेयिों ।।
आदीकाल नारीयोकौ क्य आदरछियो ।
बीच मजी क्य हैगोय सब सुणि लियों ।।
आज कसौ हई गोछा उलैं सुणी लिया ।
सुणि वैं समझी वटी मनमें गुणिया ।।

दैली बटी नारी हांती लच्मी कछीयां
जननी जनम दात्री देवीयों कंछीया ।।
शास्त्रों में संस्कृता का यसा छै सुलोक ।
शास्त्रकार बतै गई लगै गई रोक ।।
(यत्र नार्यास्त्य पुज्यते रमन्ते तत्र देवता)
जै घरमा नारी जब पूजनीयां हैछा ।
देवता रमनी उती सुबुद्धि रहैंछा ।।
सुबुद्धि लै शुभ काम तब सुख हौछ ।
दुःखा का वां दर्शन नै आनन्द रहौछ ।।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध नारिये ता छीया ।
आदिशक्ति नारायणी नारी हां कंछीया ।।
नारीयो लै करा तब अलौकिक काम ।
असुरौ का नाश करौ जित संगराम ।।
यमराज हणी लकी नारीयाता लड़ा ।
यमलोक बटि ल्यया पतिकै दगड़ा ।।
साबित्री की कहानो छा सबुकी सुणिया ।
मां बैणियों ध्यान दिबैं मन में गुणिया ।।
शक्ति रूपा नारीया छी तब छी आदर ।
सुणि लियों कलै हय नारी निरादर ।।
नारी में निरय जब सत लैं धरम ।
संयम नै नियम के बड़ा अ करम ।।
पति छोड़ी कंण लागी पर पति प्रीत ।
उनरौ नरक हौछ शास्त्रै की रीत ।।

नरग सरग वैंणा यो लोकै हैजाछा ।
परलोक कैलै द्यखा येती देखी जाछ ॥
धरम करम गिरा शक्ति हयी क्षीण ।
मान गोय सनमान आदर है हीण ॥
तहै बटी नारी हांती अनारीछा कय ।
बल बुद्धि के नी हांती अवला है कय ॥
मध्य युग मजी फिरी रिवाजै है गोय ।
तब वै पै नारियोंकौ ह्यव क्तम हय ॥
नारि पै समई निपै गिरनै रहयी ।
गिरनै गिरनै तब यो गत है गई ॥
बुद्धि बल बिद्याकौ के निरहयो ध्यान ।
नारी हैगे बिलकुलै मुरख अज्ञाग ॥
आज हैवै पैंली वैण यस बात छिया ।
अब उ जमांनौ न्हैगो भली समझिया ॥
अब ऐगो सभ्यता व शिक्षिता का युग ।
नारी वर्ष बटी अाब ऐगों नारी युग ॥
देशाका शहरी नारी शिक्षित है गई ।
पुरुषों है नारी अब आधील न्है गई ॥
पिछड़ी रै गोय हम पहाड़ा नारीया ।
पहाड़ों में देहातों का देहाती नारीया ॥
कुमाऊँ लै गढ़वाल आठ जिला खास ।
हमरा जनरा छा या गौनों में निवास ॥

अब सब मां बैणियों चेतन है जाओ।
समाजा सुधार हणी अघील ऐजाओ ॥
ऐती आब बनी गोछ महीला समाज।
स्वतंत्र भारत मजी गणतंत्र राज ॥
देशै की शाशक आज भारत की नारी।
हम क्यलै पछियुला सुणौ सब प्यारी ॥
और ज्यादा क्य कणोंछा एतुकै बहौत।
क्यलकी मकणी अब टैम लैगों भौत ॥
बहौतै रैगई म्यरा मनका विचार।
रोकि हली मैंलै आब भाव उद्गार ॥
चरित्रों पै कणौ छियौ फैसनों विचार।
बडिरौ जौ नारियोको फैसन श्रंगार ॥
अब यकै आघील का विदुषिया कैला।
म्यराबाद आजी भौत प्रवचन हैला ॥
सभापती सदस्याओं जै-हिन्द जै-राम।
जै-भारत जै-दुनिया जै हिमाला धाम ॥

—:०:—

—:सभापति:—

सज्जनियों मां बैणियो मोहनी देवी जी ने आप को प्राचीन काल की नारी और अर्वाचीन (बीच के युग) की नारी की समस्या और सुचरित्रता पर सुन्दर प्रवचन सुनाये। अब मैं मोतिमा देवी से निवेदन करती हूँ कि वह आपको आधुनिक नारी गौरव पर अपने विचारों से अवगत करावेंगी।

सज्जनियों सभापती मां बहनों सब ।
नारी जाती गौरब कैं मैं सुसुणोंला अब ॥
आब एगों मां वैणियो विकास कौ युग ।
नारी वर्ष चली रौछा नारियोकौ युग ॥
आब हैगों नारियोंकौ समअधिकार ।
योग्यतानुसार हैगों विशेषाधिकार ॥
देश मजी नारियों लै पढ़ी लिखी हैछा ।
भारत की नारी आज गद्दी में मैरैछा ॥
जज लकी मजिस्ट्रेट नारीयां है गई ।
वकील लै वैरिस्टर नारीयां है गई ॥
हकीम लैं बैद्य लकी है गई डाक्टर ।
प्रोफेसर प्रिंसीपल हैगी ओफीसर ॥
सभ्यता छा बोलचाल विनम्र स्वभाव ।
खान पान शिष्टताकौ भलौछा पैराव ॥
एक बात और कनू धरी लिया ध्यान ।
कुछ नारी चहानी जो फैसनैं की शान ॥
विदेशी फैशन मजी रंगी वैं जो आज ।
भूली जानी परम्पपरा सभ्यता रिवाज ॥
परम्परा बिलकुलैं छोड़ी है जनुलैं ।
धरम ईमान सबु छोड़ी है जनुलैं ॥
आधु अंग नांगड़ी छा आधु छा ढकिया ।
फैसनैं कारण जैलै लाज गवैं दिया ॥

मैं उनकै निमाननौ भारतै की नार।
फैसनैं हाँ क्वे निकनों सभ्यता सुधार॥
सफाई लै सुद्धताई सभ्यता तौ हई।
जीवर कपड़ा लकी शिष्टताई हई॥
बढ़िया कपड़ा लत्ता साड़ी लै जम्फर।
सुन चाँदी जेलै हौछा सैणीयों जेवर॥
शिरौकौ श्रींगार लकी बिन्दूली सीन्दूर।
ईमजी क्वे फैशन नै हणौ चैं जरूर॥
य हमरी प्राचीन परम्परा हई।
सिकिया पढ़िया हैवे यो प्रगती हई॥
भाषा चाहै कोई सीको, हिन्दी राष्ट्र माषा।
कुमाऊँनी गढ़वाली याक उपभाषा॥
आपस में बोलचाल उकड़ी न छोड़ो।
बांकी जब जसौ मौक उसै जीभ मोड़ो॥
यहांती प्रगती कनी यहांती सुधार।
मां बैणियों ध्यान दिया योंम्यरा विचार॥
देश मजी माँ बेंणियो बड़ी गेछ नारी।
लेकिन पिछड़ी रैगे परवती नारी॥
यपारी हमुलै अब विचार करौणौ।
जमान का साथ साथ आधीन बढ़णौ॥
यतुक कैवटी आब समाप्त करनू।
सभापति मां बैणियों अरज करनू॥

—:सभापतिः—

अब भागीरती देवी जोशी आपको अपने विचार सुनायेंगी। आप दिल्ली में अध्यापिका हैं। आर्य कन्या विद्यालय दिल्ली में पढ़ाती हैं। आपका काम ही कन्याओं को शिक्षा देने का है। जोशी जी आपको राजधानी दिल्ली की नारियों की प्रगति के बारे में बतायेंगे। दिल्ली में पर्वतीय नारियों की प्रगति पर भी प्रकाश डालेंगी।

भागीरती देवी जोशी

अध्यक्षा जी महोदया परवती नारीयों।
बालीकाओ युवतीयों चेलियो ब्वारियों॥
बहनो मैं बारमासै दिल्ली में रहनू।
नगर निगम मजी नौकरी करनू॥
नानीयो कैं पढ़ाणक म्यर हय काम।
बहैन भागुली दीदी म्यर उती नाम॥
देखनू में समझनू उती कौ व्यवहार
देहली में नारीयोंकौ सब शिष्टाचार॥
दिल्ली का नारीयां लकी परवती नारी।
करीहै सबुलै उती परगती भारी॥
दिल्ली का जो मूल बासी बणियां ब्योपारी।
यो जो छिया और लकी राज्य कर्मचारी॥
उनरा चेलियां हैगी ठुला ओफीसर।
टीचर लै हेडमास्टर और प्रोफेसर॥
ऊँत मानो पैली बटी शहरीये हया।
हमजी कबै आश्चर्य नैं पड़ि सीकी गया॥

लेकिन जो दिल्ली गछी पहाड़ा सैणियां ।
चनुली पनुली जसा दिल्ली देखणियां ॥
उनरा चेलियां लकी सीकी पढ़ी गई ।
पढ़ि बटी भली जगा काम कणा रई ॥
नर्स हैगी डाक्टर लै हेड मैनेजर ।
कलकें लै हेड कलर्क स्कूलों टीचर ॥
साथ साथ सीखी हैछा कताई बुनाई ।
कढ़ाई कासीदागारी सिकी है सिलाई ॥
गहाण बजाण लकी कीर्तन सतसंग ।
नारीयों का बनीयां छैं समिती लै संग ॥
यस हैगो दिल्ली मज नारियो विकास ।
पहाड़ की दशा देखी मैं बड़ी हतास ॥
मेंलकी छौ दिल्ली मज एक अध्यापिका ।
आर्य कन्या स्कूलम पढ़ानू बालिका ॥
आजकल द्वी मैहण छूट्टी पड़ी रयी ।
उती तब विद्यालय बन्द हई रयी ॥
भौतै सालो मजी मैता पहाड़म आयू ।
नारियों की प्रगती जो उनी देखी आयू ॥
ऐती मैं देखण लैरों पुराणौ रिवाज ।
बहौतै पिछड़ी रौछ नारीयों समाज ॥
गौनुका चेलियां ऐती स्कूल नीजना ।
फाटियां सुरुकी पैरी सुखड़ी नी धुना ॥

वौहौतै गौ देखीयनी एमैं पीछड़िया ।
कै गौनू मैं बिल्कुलै नीछैं क्वे पढ़िया ॥
सब जगा प्रगती को युग ऐगो आज ।
बहौतै आधीन न्हैगो नारीयों समाज ॥
दिल्ली मजी परवती नारीयों समाजा ।
बहौतै उन्नति पर चलि रौछ आजा ॥
नारिलै पुरुष लकी पहाड़ाका उती ।
भला भला काम कणी कण लैरै उती ॥
होटल दुकान कनी कारखाण परेस ।
अपणा मकानौ मजी सबुक रहेस ॥
मैम्बर छैं मिनिस्टर ठुल औफीसर ।
कारखाना कम्पनियों में ठुल मैंनेजर ॥
नारियों समाज मजि उनरा नारिया ।
शिक्षित छै विदुषी छैं चेलिया ब्वारिया ॥

●

प्रवक्ता

ऐसिकै सबुलै कया भाषण आपण ।
बारि बारि पर सब है गया भाषण ॥
जतुलै प्रवक्ता छिया सभा मैं आईयां ।
अपण अपण छी जो विचार न्याईयां ॥
सबुका विचार उती सब सुणि रया ।
आखीरी में अध्यक्षीय प्रवचन हया ॥

अध्यक्षीय भाषण

अध्यक्षा ज्यू कनी आब सब मां बैणियों ।
बालिकाओ युवतीयों पहाड़ा सैणियों ॥
सबुका विचार तुम सब सुणी हली ।
गणमान्या देवीयो लै भाषण दी हैली ॥
मैलें अब ये है बांकी क्य बताण हय ।
म्यर बोल हणी आब वांकी कै निरय ॥
वयोब्रद्धा सज्जनियो और विदूषियों ।
शिक्षित समझदार सभ्य युवतियो ॥
खगोती देवी लै कया अपण विचार ।
पहाड़ की समस्या लै और शिष्टाचार ॥
रमोती देवी लै बतै रीति कुप्रथा की ।
एक ब्रत लियो कयो ब्याकी व्यवस्था की ॥
पै जसी भाषण कया मोहनी देवी लै ।
पगचीन नारी ज्ञान बतायो उनीलै ॥
ह्यवतत्तम क्लै हयो यो लकी बताय ।
अब युग बदलीयों योलै समझाय ॥
भागुली देवी लै कयो नारीयो समाज ।
दिन्ली में बहौत ठुल बसी गौछा आज ॥
समाजमा भला सब उनु हांती कनी ।
सभ्यता सुधारा का जो बिचार धरनी ॥

छव्टा ठुला सबों मजी मिलली सादर ।
सरल व्यवहार कनी नारीयों आदर ॥
अंत में अरज मेरी सज्जनियो हणी ॥
कविता में लिखि दिला फिरि चिन्तामणी॥॥
कसी हणी चैछ आब भारतै की नारी ।
भारत भूभाग मजी परवती नारी ॥
इन्दिरा गाँधी प्रत्यछ छा नारी उदाहरण ।
ये पार में सुणै दिनू सुणों सब झण ॥
इन्द्रा का हातभ अव येती बागडोर ।
उनैलै सबुकी बुद्धी करी दी विभोर ॥
इतरी अकल बुद्धि कै मजी नी देखी ।
देश कंणी सुधारणै जो यारनी सोखी ॥
इनदिरा लै खतम कया बादलै विबाद ।
आण भैटी गोछ आव उ समाजबाद ॥
छोड़ो वै कथनी जब करनी करीछा ।
करनी लै भारत की सुरक्षा करीछा ॥
खतम है गई अब जतु छी विरोध ।
सबुका मनम ऐलै एक अनुरोध ॥
भारतै की की सुव्यवस्था भविक है जाओ ।
बीससूत्री कार्यक्रम सफल बनाओ ॥
बीससूत्री कार्यक्रम इन्द्रा लै बनायो ।
सरकारी विभागो में सबुकैं बतायो ॥

खतम कणौछ कय सब भ्रष्टाचार ।
भारत में हौणौ चैछ भल शिष्टाचार ॥
पुलिस बिभाग लकी दिल्ली प्रशासन ।
विकासाधिकारी लकी कारपोरेशन ॥
रेलवे लै रोडवेज विद्युति करण ।
हवाई वाहन लकी और निरीक्षण ॥
सिंचाई विभाग लकि जमीन विभाग ।
पलिर्वक विमाग लै वन लै विभाग ॥
व्योपारी विभाग लकी गल्ला अनाज कौ ।
सबुकौ सुधार करौ सभा समाज कौ ॥
देईमानी भ्रष्टाचार खतम कराओ ।
सबुमजी एकता की भावनायें ल्यावो ॥
प्रान्तीय सरकार लकी केन्द्रीय सरकार ।
बीस सूत्र कार्यक्रम है गोय प्रसार ॥
बनै बै सबुकौ आब एकै मजमून ।
लागू कैदी राष्ट्र मजी सुरक्षा कानून ॥
जो कलौ कानून भंग उ पकड़ी जालौ ।
अफसर पकड़ी जैला जो रिश्वत खालौ ॥
व्योपारी पकड़ी जालौ जो कलो बिलैक ।
नौकर निकाली जालो जो हलौ नालैक ॥
समाज में गुण्डा गर्दी जो फैलाणौ चालो ।
गरीब कमजोर कणी जो दबाण चालो ॥

पकड़ी वै बे पुछिये जेल भेजी जालौ ।
राष्ट्र मजी अव्यवस्था जो फैलाण चालो ।।
सुख हवो सुव्यवस्था सबुकैं समान ।
गरीब अमीर सब है जावो समान ।।
देखि बटि इन्दिरा कौ सुरक्षा कानून ।
बीस सूत्री कार्य कर्भ देखिवै मजमून ।।
पिछड़ियां दवियों की बनि गेछ आश ।
भारतै की जन जाति जो छिया निराश ।।
इन्दिरा गांधी लैं एस बनाय पलान ।
सब नर यकसर है जाओ समान ।।
नारी नर सबुकै छा समानाधिकार ।
नारी वर्ष नारीयों क विशेषाधिकार ।।
देखि लियो माँ वैणियो इन्दिरा को शासन ।
भारतै की नारी छा उ सोचो तन मन ।।
राष्ट्र लकी समाज की उछा कर्णधार ।
पहाड़ा नारियो तुम कै लियो विचार ।।
यतुकै कईया म्यर मन में धरिया ।
कर्तव्य समझी बटी सुधार करीगा ।।
यतुकै कै बटो सभा विसर्जन कनू ।
एक बात सुणि लियो याद दिलै दिनू ।।
य सभा कौ नाम वैणा पर्वतीय नारी ।।
कार्य कर्ता छांटी जैला सोचीवै विचारी ।।

तुम सब सदस्यों में नाम लिखै जया ।
आघिलै की सभा मजि जरूर ऐ जया ।।
अबै की जो सभा हलीं हम बुलै ल्यूला ।
पूरौ पता लिखै जया सूचना मेजूला ।।

राष्ट्रोय गान (कुमाउंनी में)

जै जननी जै जननी भारतै जननी ।
पहाड़ै की देब भूमि जै जग जननी ।।
त्यरि गोदी मजी माता यों रतन आनी ।
नैहरु व पंत जसा राष्ट्र सेवा कनीं ।।
बद्रीदत्त पांडे जसा हरगोविन्द पन्त ।
खुशी राम आर्य जसा राष्ट्र कवि पन्त ।।
जै जननी जै जननी भारतै जननी ।
त्यरी गोदी मजी माता शक्ति पैद हनी ।।
झांसी की लक्ष्मी जसी राष्ट्र हैं मरनी ।
जै जैं माता जैं जननी जगत जननो ।।
जैं जननी जै जननी पहाणै जननी ।
जै हिन्द इन्द्रा गांधी जैं जग जननी ।।

इति शुभम

श्री चिन्तामणी पालीवाल

—:०:—

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक द्वारा तिलक प्रिंटिंग प्रैस दिल्ली में मुद्रित

राष्ट्रीय गान (हिन्दी में)

जै जग जननी भारत जननी पर्वत जननी तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तुही ब्रह्मानी तुही भवानी तूही लक्ष्मी तुम्हैं प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तुही द्रोपदी तुही दमयन्ती तुही सावित्री तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तुही सती हे सीता तूही सुलोचना हे तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तुही अनुसुईया तुलसी तूही वृन्दा तूही तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तूही अहिल्या दारा तूही मीरा सहजो तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तूही झांसी की लक्ष्मीवाई सरोजनी हे तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
तुही कस्तूरबा तूही कमला तूही इन्दिरा तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
भारत की तुम मात्र शक्तियो कोटि कोटि सत तुम्हें प्रणाम।
जै जग जननी भारत जननी...॥
जै जग जननी भारत जननी पर्वत जननी तुम्हें प्रणाम।

—:०:—

२०-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम

देश की भलाई व गरीब व कमजोर वर्ग को उभारने के लिए प्रधान मन्त्री के २० सूत्री **कार्य-क्रम** की रूप रेखा एक महत्वपूर्ण योगदान है ।

१. आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के दामों में गिरावट के स्थान को बनाये रखना, उत्पादन की गति तेज करना, आवश्यक उपभोक्ता पदार्थों की वसूली व वितरण व्यवस्था को प्रभावशाली बनाना, सरकारी खर्च में कमी करना ।

२. कृषि भूमि की हदबन्दी को तेजी से लागू करना, अतिरिक्त भूमि को ज्यादा तेजी से बांटना तथा भूमि सम्बन्धी प्रलेख तैयार करना । इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि जनजातीय लोगों को उनकी भूमि से वंचित न किया जाए ।

३. देहाती क्षेत्रों में भूमिहीनों व समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवास भूमि के आबंटन को तेजी से लागू करना ।

४. मजदूरों से जबरन काम कराने को, जहां कहीं ऐसा होता हो, गैर कानूनी करार दिया जायगा ।

५. ग्रामीणों के कर्ज की समाप्ति की योजना-भूमिहीन मजदूरों, दो हैक्टेयर से कम भूमि वाले छोटे और सीमांत किसानों व देहाती दस्तकारों से कर्ज की वसूली पर रोक लगाने के लिए कानून बनाया जायेगा ।

६. खेतिहर मजदूरों के निम्नतम मजदूरी सम्बन्धी कानूनों में संशोधन होगा और जहां आवश्यक होगा, न्यूनतम वेतन को उचित रूप से बढ़ाने के लिए कार्रवाई की जायेगी ।

७. ५० लाख हैक्टेयर भूमि में और सिंचाई की व्यवस्था की जायेगी । भूमिगत जल के उपयोग के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाए जायेंगे और पीने के पानी की व्यवस्था के लिए, विशेष रूप से सूखा पड़ने वाले क्षेत्रों में और अधिक सर्वेक्षण किए जायेंगे ।

८. बिजली उत्पादन कार्यक्रमों में तेजी लाई जायेगी । केन्द्र के नियंत्रण में सुपर ताप बिजलीघरों की स्थापना की जायेगी ।

९. हथकरघा क्षेत्र के विकास के लिए नये कार्यक्रम लागू किए जायेंगे । बुनकरों को और अधिक सुरक्षा प्रदान करने की नीति को अधिक

युक्तिसंगत बनाया जायेगा।

१०. नियंत्रित मूल्य पर बिकने वाले कपड़े की क्वालिटी सुधारी जायेगी उसके वितरण की उचित व्यवस्था की जायेगी।

११. शहरी भूमि व शहर बसाने योग्य भूमि का समाजीकरण, खाली छोड़ी गई अतिरिक्त भूमि पर कब्जा करने तथा नए आवासों में चौकी क्षेत्र को कम करने के लिए कदम उठाए जायेंगे।

१२. दिखावे की शानदार सम्पत्ति के मूल्यांकन के लिए और कर-चोरी पकड़ने के विशेष दस्ते कायम किए जायेंगे। आर्थिक अपराधियों के खिलाफ तुरन्त निर्णायक मुकदमा चलाया जायेगा तथा कड़ा दण्ड दिया जायेगा।

१३. तस्करों की सम्पत्ति जब्त करने के लिए विशेष कानून बनाया जायेगा।

१४. पूंजीनिवेश प्रक्रिया को उदार बनाया जायेगा। आयात लाइसेंस का दुरुपयोग करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई की जायेगी।

१५. उद्योगों में, विशेष रूप से बिक्री के स्तर पर, कर्मचारियों की शिरकत को तथा उत्पादन कार्यक्रम सम्बन्धी योजनाओं की शुरूआत।

१६. सड़क परिवहन के लिए राष्ट्रीय परमिट योजना शुरू की जायेगी।

१७. मध्यम वर्ग के आयकर में छूट की सीमा बढ़ाकर ८ हजार रुपये कर दी जायेगी।

१८. छात्रावासों में छात्रों के लिए नियंत्रित मूल्य पर आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की जायेगी।

१९. छात्रों को नियंत्रित मूल्य पर पुस्तकें व स्टेशनरी के सामान उपलब्ध कराये जायेंगे तथा पुस्तक बैंकों की स्थापना की जायेगी।

२०. नई एप्रेन्टिसशिप योजना शुरू की जायेगी जिससे रोजगार व प्रशिक्षण के अवसर बढ़ेंगे। अप्रेन्टिशों की भर्ती करते समय अनुसूचित जाति और जनजाति, अल्पसंख्यकों और विक्लांगों का विशेष ध्यान रखा जायेगा।

(राष्ट्र के नाम प्रधानमन्त्री द्वारा १ जुलाई १९७५ के प्रसारण से)

कुमाऊंनी साहित्य सदन व मंडल की

पुस्तकों की सूची

किताब का नाम	मूल्य	किताब का नाम	मूल्य
दिल्ली की झलक भाग १	१-००	चुनाव आन्दोलन	२५ पै०
... ... भाग २	१-००	बाजिगो रणसिंह	३५
... ... भाग ३	१-००	राजा मालगाई विनोद	१-५०
... ... भाग ४	१-००	वीर बालक हरूसिंह हीत	१-५०
नैना सरोबर नैनीताल	१-००	घर-घर की समस्या	७५
प्राचीन होली संग्रह	१-००	उत्तरायणी मेला	५०
कुमाऊ के सम्राट भाग १	१-००	साल्दे सोमनाथ कौतिक	१-००
... ... भाग २	१-००	दीवानी विनोद	१-५०
... ... भाग ३	१-००	दीबानी विनोद मझला	१-००
... ... भाग ४	१-००	दीवानी विनोद छोटा	५०
कु. के स. सम्पूर्ण ४ भाग अ.	४.५०	बाला गोरिया ग्वेल देवता	२-००
... ... सजिल्द	५-००	वीर अभिमन्यु	१-५०
झोड़ों का झमाका	१-००	वीर रमौला	५०
दूनागिरी चालीसा	५०	रसीली गीता	१-५०
कुमाउंनी लोकगीतों का गुच्छा	१-००	राजुला मालसाई	२-००
कुमाऊ की काया	१-००	बखतै कि बात	३०
प्योली और बुरांश	१-५०	उत्तम हाई स्कूल	४०
बलिदान खंडन	३५	अपना विचार	१-००
शैलानी	७५	माँ बेटी.	७५
पर्वतीय नारी	७५	शकुन गीतावली	१-००
उत्तराखण्ड जागृति	१-००	मानिलै डानि	१-५०
कुमाऊ के प्रसिद्ध गीत	१-००	सासू ब्वारी	१-००
बाप बेटी	१-००	मेला देबी धुरा	७५
पूर्णागिरी चालीसा	३०	पूर्णागिरी देवी यात्रा	७५
पूर्णागिरी देवी यात्रा	२५	पूर्णागिरी इतिहास	६०

आगामी प्रकाशित होने वाली कुमाऊनी किताबें पुराने प्रकाशनों के नये **संस्करण :** (१) नन्द भाभी (२) दीदी भुली (३) शिव पार्वती विवाह **(४) बलिदान खण्डन** (५) गोपीचन्द योगी (६) पति पत्नि वियोग।

नई रचनायें (१) कुमाऊनी रामायण (२) श्रवण कुमार (३) सत्यवादी **[illegible]चन्द्र (४) सावित्री सत्यवान** (५) भस्मासुर बध (६) हरिद्वार महात्म्य [illegible] **सिंह हरूसिंह हीत** (८) सत्यनारायण व्रत कथा (९) गारिया [illegible]।

भूमिका

नारी वर्ष समापन के उपलक्ष में पर्वतीय नारी समाज नाम की पुस्तक आपके हाथों में है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत की प्रधान मन्त्री श्री इन्दिरा गांधी के मनाये गये १९७५ का वर्ष नारी वर्ष के समापन पर श्री चिन्तामणि पालीवाल ने पर्वतीय नारी के पतनोत्थान पर प्रकाश डाला है। पुस्तक में बताया गया है कि पर्वतीय क्षेत्रों की कमजोरी और पिछड़ा पन तथा कुछ रूढ़िवादता के कारण पर्वतीय नारी का कितना अनादर व अपमान था। प्रथम बाल्यकाल से पितृ घर से ही कहा गया है कि :—

चेली कणी को पढ़ांछा स्कूल कौलिज।
घर खेती कमाणै की हौणि चैं नौलिज॥

इन्ही विचारों से पर्वतीय नारी पिछड़ी रही फिर पति के घर आकर भी वह उपेक्षित ही रही, वहां पति किस भाव से बात करते हैं :

सैणी कंणि को लिजांछा देश परदेश।
सैणी का दगड़ा हौछा बहौत कलेश॥

इन्हीं कारणों से पर्वतीय नारी सदियों से पिछड़ी हुई थी जिसके कारण बाल विवाह बेमेल विवाह आदि होते थे।

अब वह युग बदल गया है। बीसवी सदी के तीसरे चरण में जब भारत आजाद हुआ था तब से नारी को समानाधिकार प्राप्त हुआ था। अब बीसवीं सदी का चौथा चरण शुरू हो रहा है। पर्वतीय नारी का कितना विकाश हुआ यह सब देख रहे हैं।

आज नारियां टीचर हैं, क्लर्क हैं, नर्स हैं, डाक्टर हैं, अफसर हैं, इन्हीं की संतान हर बालिका विद्यालय में पढ़ती हैं। यह सब इन्दिरा गांधी जी के १० वर्षों का परिणाम है। इसलिए 'पर्वतीय नारी समाज' पुस्तक इन्दिरा जी को समर्पित की जाती है। पुस्तक में नारियों की सभा में विभिन्न विदुषी नारियों के भाषण दिए गए हैं जिससे पर्वतीय समाज का उत्साह बढ़ेगा। त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी।

प्रकाशक